प्रादर्श प्रश्न पत्र
हिन्दी (विशिष्ट)
कक्षा – दसवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए है। प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 x 5 x 5 = 25 अंक निर्धारित है।
3. प्रश्न क्र. 6 से 10 तक प्रत्येक के उत्तर लगभग 50 से 75 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 4 अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्र. 11 से 19 तक प्रत्येक के उत्तर 100 से 120 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 5 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्र. 20 का उत्तर लगभग 250/300 शब्दों में लिखिए। इसके लिए 10 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द का चयन कर कीजिए।

(i) निंदा रस नामक निबंध में ..... तत्व की प्रधानता है।
(हास्य/व्यंग्य)

(ii) ..... छंद के प्रत्येक चरण में चौदह–बारह के विराम से छब्बीस मात्राएं होती है। (गीतिका/हरिगीकिा)

(iii) सरस्वती पत्रिका का संपादन ..... के द्वारा किया गया।
(हजारी प्रसाद द्विवेदी/महावीर प्रसाद द्विवेदी)

(iv) चरण सरोज पखारन लागा..... अलंकार का उदाहरण है।
(यमक /रूपक)

(v) 'मुट्ठी गरम करना' मुहावरे का अर्थ ..... है।
(भेंट देना/रिश्व.त देना)

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथनों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए :–

(अ) 'विद्यालय' का समास विग्रह होगा।

(क) विद्या पर आलय (ख) विद्यालय में आलय

(ग) विद्या का आलय (ग) विद्या से आलय

(ब) 'जीवन गति है वह नित अरुद्ध चलता है' पंक्ति पाठ्य पुस्तक की कविता से ली गई है।

(क) सोये हुए बच्चे से (ख) श्रद्धा से

(ग) उद्‌बोधन से (घ) जीवन संदेश से

(स) उल्लाला छंद में मात्राएं होती हैं।

(क) 26 (ख) 28

(ग) 24 (घ) 18

(द) मनः हर उदाहरण है :–

(क) स्वर संधि का (ख) विसर्ग संधि का

(ग) व्यंजन संधि का (घ) गुण स्वर संधि का

(इ) दीवान पद के उम्मीदवार कौन सा खेल खेलने लगे?

(क) फुटबाल (ख) शतरंज

(ग) हॉकी (घ) गुल्ली डंडा

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य/असत्य बताइये –

(i) लोकायतन के रचयिता सूरदास है।

(ii) प्रबंध काव्य में छंदो की तारतम्यता होती है।

(iii) बेटियों को गौरव कथा कहा गया है।

(iv) मोहन रामधन के साथ डाकू से मिलने गया।

(v) कबीर ने बाहरी आडंबरों का समर्थन किया।

प्रश्न 4. स्तंभ 'अ' के लिए स्तंभ 'ब' से चुनकर सही जोड़ी बनाइये–

1. आधुनिकता को आधार देती है – (अ) लोकप्रिय

2.	लोक में प्रिय का समस्त पद होगा	–	(ब)	जिंदगी
3.	शांत रस का स्थायी भाव है	–	(स)	महादेवी वर्मा
4.	प्रलय के ध्वंस में पड़ी मिल सकती है	–	(द)	परंपरा
5.	'तू' न अपनी छांह को अपने लिए कारा बनाना–		(इ)	विरासत
			(प)	निर्वेद
			(द)	वियोग

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए

(i) लोकगीतों में किस संस्कृति के दर्शन होते है?

(ii) रामधारी सिंह दिनकर किस धारा के कवि है?

(iii) गणेश शंकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विशेष गुण क्या था?

(iv) किस तरह के पेड़ की छाया में बैठना चाहिए।

(v) प्रगतिवादी कविता में किस वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई है?

प्रश्न 6. तुलसीदास जी ने 'बालहठ' का स्वाभाविक चित्रण किया है कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए :–

अथवा

'मैंने आहुति बनकर देखा' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए?

प्रश्न 7. कौआ और कोयल के उदाहरण से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

अथवा

सूरदास ने स्वयं को कुटिल, खल, कामी क्यों कहा है।

प्रश्न 8. प्रगतिवाद की दो विशेषताएँ बताकर दो प्रगतिवादी कवि एवं उनकी एक–एक रचना का नाम लिखिए?

अथवा

महाकाव्य की दो विशेषताएँ बताकर दो कवि एवं उनके एक–एक महाकाव्य का नाम लिखिए?

प्रश्न 9. रेखा चित्र और संस्मरण में दो अंतर लिखिए एवं दोनों विधाओं की एक–एक रचना एवं उनके रचनाकार का नाम लिखिए?

अथवा

उपन्यास किसे कहते हैं? किन्हीं दो उपन्यास एवं उपन्यासकारों के नाम लिखिए?

प्रश्न 10. पुरुषोत्तम किस प्रकार के व्यक्ति थे, वे सम्मान के पात्र क्यों थे?

अथवा

गांव के सुसंस्कृत आदमी की विशेषताएँ लिखिए?

प्रश्न 11. 'कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं' परसाई जी के इस कथन की विवेचना कीजिए?

अथवा

यक्ष ने आशीर्वाद देते हुए युधिष्ठिर से क्या कहा?

प्रश्न 12. हरिगातिका छंद की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए?

अथवा

अतिशयोक्ति अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

प्रश्न 13.(अ) निम्नलिखित में से किन्हीं तीन मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(i) दिन रात एक करना (ii) जी चुराना

(iii) अंगद का पैर होना (iv) पहाड़ टूट पड़ना

(ब) हिन्दी की चार बाल पत्रिकाओं के नाम लिखिए?

अथवा

(अ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए (कोई तीन)

(क) ईश्वर को न मानने वाला

(ख) जिसकी आयु लंबी हो

(ग) अधिक बोलने वाला

(घ) पुत्र के प्रति स्नेह का भाव

(ब) निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करके नाम लिखिए :–

(i) देवकी पुत्र (ii) बाल लीला

प्रश्न 14. प्रेमचंद अथवा वासुदेवशरण अग्रवाल का साहित्यिक परिचय निम्न बिंदुओं के आधार पर लिखिए :–

दो रचनाएँ

भाषा शैली

साहित्य में स्थान

प्रश्न 15. महादेवी वर्मा अथवा कबीर की काव्यगत विशेषताएँ निम्न बिन्दुओं के आधार पर लिखिए।

दो रचनाएँ, भावपक्ष, साहित्य में स्थान

प्रश्न 16. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :–

नीको लसत लिलार पर, टीको जरित जराय।
छबिहिं बढ़ावत रवि मनौं, ससि मंडल में आय।।

अथवा

तुंग हिमालय के कंधों पर, छोटी बड़ी कई झीलें हैं,

उनके श्यामल नील सलिल में समतल देशों से आ आकर,
पावस की ऊमस से आकुल, तिक्त मधुर बिस तंतु खोजते,
हँसो को तिरते देखा है बादल को घिरते देखा है।

प्रश्न 17. निम्न लिखित में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिएः–

नकली बूंदी प्राणों से अधिक प्रिय है। जिस जगह एक भी हाड़ा है, वहां बूंदी का अपमान आसानी से नहीं किया जा सकता। आज महाराणा आश्चर्य के साथ देखेंगे कि यह खेल केवल खेलही नहीं रहेगा, यहाँ की चप्पा चप्पा भूमि सिसौदियों और हाडाओं के खून से लाल हो जायेगी।

अथवा

इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ–साथ आत्मबल भी। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमें ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणों वाले संसार में कम है और जो है वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुंच नहीं है।

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राष्ट्रीय चरित्र का विकास ही प्रजातंत्र का आधार है। किसी भी राष्ट्रकी नींव उसके राष्ट्रवासियों के चरित्र पर आधारित है। जिस राष्ट्र के नागरिकों का चरित्र जितना महान होगा उसका भविष्य भी उतना महान होगा, प्रजातंत्र के क्रियान्वयन में राष्ट्र के चरित्र की रक्षा आवश्यक है। चरित्र से नैतिकता का विकास होता है और नैतिकता प्रजातंत्र की रक्षा कर उसे सफल बनाती है। राष्ट्रीय चरित्र से राष्ट्र के गौरव में वृद्धि होती है। यही कारण है कि भारत अपने राष्ट्रीय चरित्र के नाम पर विश्व के समक्ष अपना मस्तक ऊंचा किये हुए है।

प्रश्न 1. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए

2. राष्ट्रीय चरित्र के विकास को किसका आधार कहा गया है।

3. उपरोक्त गद्यांश का सारांश लिखिए?

प्रश्न 19. परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर मित्र को बधाई पत्र लिखिए :–

अथवा

शाला शुल्क मुक्ति हेतु आर्थिक कारण बताते हुए अपने प्राचार्य को पत्र लिखिए?

प्रश्न 20. निम्न लिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 250 से 300 शब्दों में निबंध लिखिए?

1. गुरु शिष्य के नैतिक मूल्य
2. पर्यावरण प्रदूषण
3. कम्प्यूटर
4. विज्ञान वरदान या अभिशाप

– – – – – –

आदर्श उत्तर

हिन्दी विशिष्ट

कक्षा–X

उत्तर 1. रिक्त स्थान की पूर्ति –

(i) व्यंग्य

(ii) गीतिका

(iii) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(iv) रूपक

(v) रिश्वत देना

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन :–

(i) विद्या का आलय

(ii) उद्‌बोधन कविता से

(iii) 28 मात्राएं

(iv) विसर्ग संधि का

(v) हॉकी

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 3. सत्य/असत्य का चयन –

(i) असत्य

(ii) सत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 4. सही जोडियां बनाइये –

(i) परंपरा

(ii) लोकप्रिय

(iii) निर्वेद

(iv) जिंदगी

(v) महादेवी वर्मा का

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

(1) लोक गीतों में लोक संस्कृति के दर्शन होते है।

(2) दिनकर राष्ट्रीय धारा के ओजस्वी कवि थे।

(3) गणेश शंकर विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विशेष गुण गंभीरता और लगनशीलता था।

(4) जो बारह मास फलता है, उस पेड़ की छाया में बैठना चाहिए।

(5) प्रगतिवादी कविता में शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई है।

प्रत्येक सही उत्तर पर 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 6. दशरथ के चारों पुत्रों के बालहठ का मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक वर्णन तुलसीदासजी ने किया है बालक चंचल और अस्थिर होते हैं। बालहठ में संभव असंभव का विचार नहीं होता। जो हठ करते हैं उसे छोड़ते नहीं है। कभी खुश हो जाते हैं कभी नाराज होते हैं। प्रसन्न होकर ताली बजाकर नाचते हैं। बालक की बाल चेष्टाओं से परिवार के सभी सदस्यों का हृदय आनंद से भर जाता है। इस प्रकार कवि ने दशरथ के चारों पुत्रों की बाल चेष्टाओं और बालहठ का स्वाभाविक एवं सजीव चित्रण किया है।

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

'मैंने आहुति बनकर देखा' कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि मानव जीवन नश्वर तथा क्षणिक है। इसमें पराजय है, गति को कुंठित करने वाली अनेक रूकावटें है। यह संसार एक यज्ञ के समान है जिसमें जितनी आहुति दी जाय उतनी पवित्रता निखरती है। हमें जीवन रूपी पथ पर लगातार आगे बढ़ते जाना है, संघर्षों का सामना करना है और संसार में अपनी पहचान छोड़ कर जाना है। यही हमारा लक्ष्य है।

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. कौआ और कोयल के माध्यम से कवि गिरधर यह संदेश देना चाहते हैं कि व्यक्ति को स्वयं में गुणों का विकास करना चाहिए। इसको स्पष्ट करने के लिए वे कौआ और कोयल को इस प्रकार उद्घृत करते हैं। कोयल की वाणी मधुर और कर्णप्रिय है। यही गुण उसे प्रिय बनाता है। जबकि कौए की आवाज कठोर, कर्कश है और कानों को अप्रिय लगती है। जिससे वह तिरस्कार का पात्र बनता है। संसार में गुणी को चाहने वाले हजारों लोग है। जबकि गुणहीन को उपेक्षा, अपमान ही मिलता है। अतः कवि का संदेश सत्य है व्यक्ति को अपने अंदर गुणों का विकास कर सबका प्रिय बनने का प्रयास करना चाहिए।

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

सूरदास के आराध्य देव श्री कृष्ण है और सूर अपने आराध्य से कहते हैं आप मेरा उद्धार कीजिए वे एक भक्त के रूप में अपने प्रभु के समक्ष अपनी दीन–हीन दशा का वर्णन कर ईश्वर की कृपा प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते है। सूरदास स्वयं को दुष्ट, कुटिल और वासनाओं में लिप्त रहने वाला कहते हैं। वे कहते है मैं सबसे अधिक अधर्मी, पापी, अपराधी हूं अतः हे प्रभु आप मेरा उद्धार कीजिए।

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 8. प्रगतिवाद की विशेषताएं –

1. पूंजीपति वर्ग के प्रति घृणा का प्रचार प्रगतिवादी कलाकारों ने किया।
2. शोषित वर्ग की दीन–हीन दशा का वर्णन करके दोनों वर्गों का भेद स्पष्ट किया गया।
3. नारी के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया गया।
4. सरल शैली अपनाकर अपनी रचनाओं को आम लोगों तक पहुंचाना ही प्रगतिवाद का उद्देश्य था।

प्रगतिवादी कवि	–	रचनाएँ
1. नागार्जुन	–	युगधारा, सतरंगे पंखो वाली, प्यासी पथराई आंखें
2 सुमित्रानंदन पंत	–	युगवाणी, ग्राम्या
3. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	–	कुकुरमुत्ता
4. शिवमंगल सिंह सुमन	–	हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया।
5. त्रिलोचन	–	धरती , मिट्टी की बारात
6. रांगेय राघव	–	अजेय खंडहर, मेधावी, राह के दीपक, पांचाली
7. केदारनाथ अग्रवाल	–	युग की गंगा, फूल नहीं बोलते हैं नींद के बादल

(उपरोक्त में से प्रगतिवाद की कोई भी दो विशेषता एवं दो कवियों के नाम एवं रचनाएं छात्र लिख सकते है)

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

महाकाव्य की विशेषताएं –

महाकाव्य में जीवन अथवा घटना का सांगोपांग चित्रण होता है। वृहद काव्य होने के कारण ही इसे महाकाव्य कहा जाता है। विशेषताएं निम्न है :–

1. आठ या उससे अधिक सर्ग होते है।
2. महाकाव्य का नायक धीरो दात्त गुणों से युक्त होता है।
3. शांत, वीर अथवा श्रृंगार रस में से किसी एक की प्रधानता होती है।
4. महाकाव्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।
5. इसमें अनेक छंदो का प्रयोग होना है।

प्रमुख महाकाव्य		**कवि**
पृथ्वीराज रासो	–	चन्द्रबरदायी
पद्मावत	–	जायसी
रामचरित मानस	–	तुलसीदास
साकेत	–	मैथिली शरण गुप्त
कामायनी	–	जयशंकर प्रसाद

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. रेखा चित्र और संस्मरण में अंतर –

रेखा चित्र	–	**संस्मरण**
1. कल्पना की प्रधानता रहती है		1. यथार्थ की प्रधानता रहती है।
2. रेखा चित्र के विषय विविध होते है।		2. संस्मरण का विषय कोई विशेष व्यक्ति या विशेष घटना ही होती है
3. शैली चित्रात्मक होती है।		3. शैली विवरणात्मक होती है।
4. विषय प्रधान होता है।		4. विषयी प्रधान होता है।

रेखा चित्र – चीनी फेरीवाला – रचनाकार महादेवी वर्मा

संस्मरण – अतीत के चलचित्र – रचनाकार – महादेवी वर्मा

(दो विशेषताओं पर 2 अंक दोनों विधाओं की एक–एक रचना एवं रचनाकार पर 1–1 अंक कुल 4 अंक)

अथवा

उपन्यास शब्द 'उप' उपसर्ग और न्यास शब्द के योग से बना है। उपन्यास ऐसी गद्य रचना है जिसमें यथार्थ जीवन का चित्रण किसी कथा वस्तु के सहारे किया जाता है। इसमें संपूर्ण युग एवं जीवन का चित्रण होता है। इसका उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं अपितु जीवन के रहस्यों का उद्घाटन भी है। यह आधुनिक युग की देन है और इसे आधुनिक युग का महाकाव्य कहा जाता है।

उपन्यासकार एवं उपन्यास – प्रेमचंद– गोदान, जयशंकर प्रसाद–चन्द्रगुप्त, फणीश्वरनाथ रेणु– मैला आंचल।

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. पुरुषोत्तम ऐसे व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति है जो सत्य की राह पर चलते है, वे धर्म का पालन करने वाले व्रती पुरुष है। वे संध्यातर्पण, हवन इत्यादि धार्मिक कार्य नियमपूर्वक करते हैं, वे कर्त्तव्य का पालन राष्ट्रप्रेम, सत्यनिष्ठा तथा शरणागत की रक्षा में पूर्ण विश्वास रखने वाले व्यक्ति है। अर्थात् एक वाक्य में कहा जाए तो पुरुषोत्तम अपनी सत्य निष्ठा और आचार निष्ठा, राष्ट्रप्रेम आदि गुणों के कारण चतुर्दिक, चर्चित और सम्मान पात्र थे

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

गांव के सुसंस्कृत आदमी की विशेषातएँ :–

1. गांव का आदमी विश्वास पर बिक जाता है और धर्म के नाम पर झुक जाता है।

2. वह त्याग में से? प्राप्ति तथा परिश्रम में से आनंद प्राप्त करता है।

3. सब कुछ सहता है किंतु शिकायत नहीं करता।

4. सबकी सुनता है पर अपनी ओर से कुछ नहीं कहता।

5. दु:ख का पहाड़ आ जाए तो सुख की क्षीण रेखा पर वह सदा मुस्कुराता है और अकेला रह जाने पर भी राह नहीं छोड़ता है।

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. श्री परसाईजी ने अपने व्यंग्य निबंध 'निंदा रस' में निदंकों के विभिन्न प्रकार बताए है। उसमें से एक प्रकार यह है कि कुछ लोग निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं, उनके मन में किसी के प्रति बुरा भाव नहीं होता है वे किसी का बुरा भी नहीं चाहते किंतु रात दिन बड़ी निष्ठा से निंदा करने में लीन रहते हैं। उनकी निष्पक्षता और लिप्त न होने का भाव इसी से स्पष्ट होता है कि प्रसंग आने पर वे अपने पिता की निंदा भी पूरे आनंद के साथ करते हैं। वस्तुतः निंदा उनके लिए टॉनिक, ऊर्जा का कार्य करती है जिससे उनके जीवन में समरसता आती है। यही कारण है कि वे निरपेक्ष भाव से निंदा में संलग्न रहते हैं।

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

युधिष्ठिर के सद्‌गुणों से मुग्ध होकर यक्ष ने उसे सीने से लगाया तथा आशीर्वाद देते हुए कहा– 'बारह बरस के वनवास की अवधि पूरी होने में अब थोड़े ही दिन शेष रह गए हैं। बारह मास तक तो तुम्हें अज्ञातवास करना है, वह भी सफलता से पूरा हो जाएगा। तुम्हें और तुम्हारे भाईयों को कोई भी नहीं पहचान सकेगा। तुम अपनी प्रतिज्ञा सफलता के साथ पूरी करोगे ये मेरा आशीर्वाद है इतना कह कर धर्म देव अन्तर्ध्यान हो गए।'

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 12. हरिगीतिका छंद की परिभाषा :–

यह सममात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16–12 की यति के साथ 28 मात्राएं होती है। प्रत्येक चरण के अंत में लघु–गुरु होता है।

उदाहरण :– वह सनेह की मूर्ति दयामयी माता तुल्य महीं है,
उसके प्रति कर्त्तव्य तुम्हारा, क्या कुछ शेष नहीं है।
हाथ पकड़कर प्रथम जिन्होंने चलना तुम्हें सिखाया,
भाषा सिखा हृदय का अद्‌भुत, रूप स्वरूप दिखाया।
(अन्य उदाहरण भी हो सकता है)

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

अतिशयोक्ति अलंकार की परिभाषा : जहां लोकसीमा का अतिक्रमण करके किसी वस्तु या विषय का वर्णन बढ़ा–चढ़ाकर किया जाए वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :– पड़ी अचानक नदी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।
(अन्य उदाहरण भी हो सकता है)

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 13. (अ) मुहावरों का अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग

(1) दिन रात एक करना – कड़ी मेहनत करना

वाक्य – मोहन ने बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु दिन–रात एक कर दिया।

(2) जी चुराना – काम से बचना

वाक्य – मोहन पढ़ाई से जी चुराता है।

(3) अंगद का पैर होना – अपनी जगह से न हिलना दृढ़ निश्चय से जमें रहना

वाक्य – सीमा विरोध होने पर भी अपने पद पर अंगद के पैर की तरह जमी है।

(4) पहाड़ टूट पड़ना – मुसीबत आ जाना

वाक्य– पिताजी की मृत्यु हो जाने से सीमा पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

(ब) बाल पत्रिकाएं :– नंदन, चंपक, देव पुत्र, चंदामामा (अन्य बाल पत्रिकाएं भी हो सकती है)

विषयवस्तु पूर्ण रूप से स्पष्ट होने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

(अ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द –

(क) नास्तिक

(ख) दीर्घायु

(ग) वाचाल

(घ) वात्सल्य

(ब) समास विग्रह –

(1) देवकी पुत्र – देवकी का पुत्र (तत्पुरुष समास)

(2) बाल लीला – बालक की लीला (तत्पुरुष समास)

उत्तर 14. साहित्य परिचय– **प्रेमचंद**

रचनाएं : वरदान, सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, निर्मला, आदि।

भाषा शैली :– प्रेमंचद ने अपनी रचनाओं मे ंहिन्दी की खड़ी बोली के सरल, सहज, बोध गम्य एवं व्यावहारिक रूप को अपनाया है। उर्दू, फारसी शब्दों के प्रयोग के साथ मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी आपने किया है। आपने परिचयात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, विश्लेषणात्मक, अभिनयात्मक शैलियों का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान : आप उपन्यास सम्राट एवं युग प्रवर्तक कहानीकार के रूप में जाने जाते है। प्रेमचंद विश्व साहित्य में ख्याति प्राप्त उपन्यासकार एवं कहानीकार के रूप में सदा अमर रहेंगे।

रचनाएं 2 अंक, भाषा शैली 2 अंक साहित्य में स्थान 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

वासुदेव शरण अग्रवाल :

रचनाएं :– भारत की मौलिक एकता, मातृभूमि का हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृथ्वीपुत्र, मलिक मोहम्मद जायसी, पद्मावत, उरज्योति, कला और संस्कृति

भाषा शैली : अग्रवाल जी की रचनाओं की भाषा प्रौढ़ एवं मंजी हुई है। भाषा तत्सम प्रधान संस्कृत निष्ठ है। इसमें मुहावरों केप्रयोग के कारण लाक्षणिकता आ गई है। इनके निबंधों में इतिहास एवं पुरातत्व संबंधी जानकारी मिलती है। विवरणात्मक एवं कथात्मक शैली में निबंध लिखे होने के कारण वाक्य विन्यास समास शैली में हैं।

साहित्य में स्थान : भारतीय साहित्य और संस्कृति के गंभीर अध्येता के रूप में वासुदेव शरण अग्रवाल प्रसिद्ध है।

रचनाएं 2 अंक, भाषा शैली 2 अंक साहित्य में स्थान 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 15. महादेवी वर्मा :

रचनाएं : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिक्षा

भावपक्ष :– महादेवी वर्मा के काव्य में प्रेम, प्रकृति, रहस्य, वेदना एवं पीड़ा का मार्मिक अंकन हुआ है। वे व्यक्तिगत धरातल से उठकर आंसुओं द्वारा कण–कण में प्रेम का संचार करना चाहती हैं। आपने प्रकृति के उद्दीपन का भव्य चित्र

अंकित किया है। आपने संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली में काव्य रचना कर गीत एवं मुक्त शैली को अपनाया है। आपके काव्य में प्रतीक अलंकार आदि का स्वाभाविक सौंदर्य सर्वत्र दिखाई देता है।

साहित्य में स्थान :– रहस्य एवं वेदना की अमर गायिका महादेवी वर्मा का छायावादी कवियों में विशिष्ट स्थान है। आपके गीतों में साहित्य और संगीत का मणिकांचन योग है।

रचनाएं 2 अंक, भाव पक्ष 2 अंक साहित्य में स्थान 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

कबीर :–

रचनाएं : साखी, सबद, रमैनी

भाव पक्ष : कबीरदासजी को हिन्दी काव्य में रहस्यवाद का जन्मदाता कहा जाता है। भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानमार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीरने सामाजिक विकारों को दूर करने का भरसक प्रयास किया। अंध विश्वास, छूआछूत, वर्ग भेद, जात पांत आदि का विरोध करते हुए समता मूलक समाज की अवधारणा को पुष्ट करने का प्रयास किया। भाषा सीधी सरल, व्यवहारिक हैं। अरबी, फारसी, राजस्थानी, ब्रज भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। रूपक, अनुप्रास, उपमा अलंकारों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग आपके काव्य में मिलता है। प्रतीक, बिम्ब तथा अन्योक्ति का समन्वय अद्‌भूत है।

साहित्य में स्थान : हिन्दी साहित्य के स्वर्ण युग माने जाने वाले भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति धारा के महान कवि कबीर दास अपने काव्य की सहजता, उत्कृष्टता के कारण उच्च स्थान के अधिकारी है।

रचनाएं 2 अंक, भाव पक्ष 2 अंक साहित्य में स्थान 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 16. पद्यांश की व्याख्या

संदर्भ : पाठ्य पुस्तक नवनीत के प्रेम और सौंदर्य बोध से अवतरित है।

प्रसंग : यहां श्रीकृष्ण के मस्तक पर सुशोभित टीके का वर्णन किया गया हैं।

व्याख्या : श्री कृष्ण के माथे पर रत्नों से जड़ा टीका ऐसा सुशोभित हो रहा है मानो सूर्य चंद्र मंडल में आकर सौंदर्य को बढ़ा रहे हो।

विशेष : जड़ाऊ टीके से कृष्ण की सुंदरता बढ़ना सूर्य चंद्र के साथ टीके की सुंदरता का वर्णन। शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा।

संदर्भ 1 अंक, प्रसंग 1 अंक, व्याख्या 2 अंक, विशेष 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

संदर्भ : पद्यांश पाठ्यपुस्तक नवनीत के प्रकृति चित्रण पाठ के अन्तर्गत बादल को घिरते देखा है शीर्षक से लिया गया है।

प्रसंग : यहां हिमालय पर बादलों को उमड़ते हुए देखकर उनका चित्रण कवि ने किया है।

व्याख्या : ऊंचे हिमालय के कंधों पर छोटी–बड़ी अनेक झीलें है। उनका नीला जल देखने में काला प्रतीत होता है क्योंकि पर्वत की छाया से वह काला दिख रहा है। वर्षा ऋतु की उमस की वजह से मैदानी इलाकों से हंस यहां आ जाते हैं उनको जल में तैरते हुए और चरपरे मीठे कमल की नाल खोजते हुए मैंने देखा है।

विशेष : हिमालय की प्राकृतिक शोभा का वर्णन एवं उपमा अलंकार।

संदर्भ 1 अंक, प्रसंग 1 अंक, व्याख्या 2 अंक, विशेष 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 17. गद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– पाठ्यपुस्तक के पाठ मातृभूमि का मान से अवतरित है।

प्रसंग :– बूंदी हाड़ा वंश में पैदा हुआ मेवाड़ का वीर सेनानी वीर सिंह अपनी मातृभूमि के स्वाभिमान की रक्षा हेतु बलिदान की घोषणा कर रहा है।

व्याख्या :– वीरसिंह को अपनी मातृभूमि से प्यार है। बूंदी के नकली दुर्ग को वह प्राणों से भी प्रिय मानता है। अपने साथियों को वह उत्साहित करता है और कहता है जिस स्थान पर एक भी हाड़ा मौजूद है उस स्थान पर बूंदी का अपमान संभव नहीं। आत्म विश्वास से भरकर वह घोषणा करता है कि आज महाराणा लाखा भी चकित होंगे। हम उनके इस विजय के खेल को भी खेल नहीं रहने देंगे। हम मातृभूमि के सम्मान की रक्षा के लिए संघर्ष करेंगे। यहां का प्रत्येक स्थान सिसोदियों और हाड़ाओं के रक्त से रंग जायेगा।

विशेषः– मातृभूमि की रक्षा हेतु बलिदान देने को तैयार हाड़ाओं का दृढ़ निश्चय।

संदर्भ 1 अंक, प्रसंग 1 अंक, व्याख्या 2 अंक, विशेष 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

संदर्भ :– प्रस्तुत अवतरण पाठ्यपुस्तक नवनीत के परीक्षा पाठसे लिया गया है।

प्रसंग :– राजा साहब के दरबार में सुजानसिंह दीवान पद की घोषणा करते है।

व्याख्याः– सरदार सुजान सिंह दीवान पद के उम्मीदवार जो परीक्षा में पास हुए उसकी घोषणा करते हैं कि हमें दयालु आत्म बल से परिपूर्ण एवं साहसी व्यक्ति की आवश्यकता थी। इस रियासत को ऐसा ही एक व्यक्ति मिल गया है। ऐसे गुणवान व्यक्ति संसार में कम ही मिलते हैं और जो है वह अपनी योग्यता से ऊंचे पद को प्राप्त कर चुके हैं।

विशेषः– परीक्षा एवं गुणवान व्यक्ति के महत्व को दर्शाया गया है।

संदर्भ 1 अंक, प्रसंग 1 अंक, व्याख्या 2 अंक, विशेष 1 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 18. अपठित गद्यांश

3.1 शीर्षक राष्ट्रीय चरित्र

3.2 राष्ट्रीय चरित्र के विकास को प्रजातंत्र का आधार कहा गया है।

3.3 राष्ट्रवासियों के चरित्र पर राष्ट्र की आधारशिला अवलंबित है। उज्जवल चरित्र भविष्य को बनाता है। चरित्र से नैतिकता एवं मानव मूल्य बढ़ता है। आज विश्व में भारत का राष्ट्रीय चरित्र से ही नाम है।

1+1+3 कुल 5 अंक

उत्तर 19. **पत्र लेखन –**

28, जूनी इन्दौर

इन्दौर, म.प्र.

दि. 25 जून 2011

प्रिय मित्र राजेश,

सप्रेम नमस्कार,

आज प्रातःकाल 'राज एक्सप्रेस' में तुम्हारा परीक्षा परिणाम देखा। जैसे ही तुम्हारा अनुक्रमांक प्रथम श्रेणी वाली तालिका में दिखा मैं खुश हो गया। इस सफलता की तुम्हें हार्दिक बधाई। परीक्षा में तुम्हारी सफलता वर्षभर की मेहनत का परिणाम है। ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम जीवन की प्रत्येक परीक्षा में इसी तरह उत्तीर्ण होते रहो।

अन्य समाचारों की जानकारी देना। घर पर अंकल–आंटी को मेरा नमस्ते कहना।

तुम्हारा मित्र

सुरेश मालवीय

5 अंक

अथवा

प्राचार्य को पत्र –

सेवा में,

प्राचार्य,

शास.उ.मा. विद्यालय,

भोपाल।

सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी सब्जी बेचने का कार्य करते हैं किन्तु विगत दो माह से वे बीमार है। परिवार की अर्थ व्यवस्था बिगड़ गई है। इसी वजह से मैं विद्यालय का शुल्क जमा नहीं कर पाया हूं। पिताजी की हालत भी अभी ठीक नहीं हैं। अतः आगे भी परेशानी रहेगी।

आपसे प्रार्थना है कि मेरी दयनीय स्थिति को ध्यान में रखकर मुझे पूर्ण शुल्क मुक्ति प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपका सदैव आभारी रहूंगा।

दि. 22.10.11

प्रार्थी

राजीव शर्मा

कक्षा 10वीं

5 अंक

उत्तर 20. **निबंध लेखन–**

पर्यावरण प्रदूषण

'मानवता पर बढ़ रहा सत्त प्रदूषण भार।
मनुज अचेतन हो रहा, कैसे हो उद्धार।।'

1. प्रस्तावना
2. वैज्ञानिक प्रगति और प्रदूषण
3. प्रदूषण का घातक प्रभाव
4. पर्यावरण शुद्धि

5. उपसंहार

प्रस्तावना – पृथ्वी का निर्माण करते समय प्रकृति की गोद में उज्जवल प्रकाश, शीतल जल एवं कोमल वायु नामक वरदान डालकर ईश्वर ने मनुष्य एवं अन्य जीव जंतुओं को एक स्वच्छ वातावरण दिया था जिसे मनुष्य ने सरहदे खींचकर अपनी अभिलाषाएं पूरी करने हेतु प्रकृति को स्वामिनी के महत्वपूर्ण पद से हटाकर दासी के स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया हैं। मानव मन की जिज्ञासा और नयी–नयी खोजो की भूख से प्रकृति के सरल कार्यों में हस्तक्षेप करना मुख्यतः चार स्वरूपों में दिखता है :–

(1) वायु प्रदूषण, (2) जल प्रदूषण, (3) भूमि प्रदूषण एवं (4) ध्वनि प्रदूषण

अंधकारमय भविष्य – मनुष्य ने वैज्ञानिक प्रगति की आंधी में बहकर वायु, जल, भूमि एवं ध्वनि प्रदूषण इतना बढ़ा दिया है कि उसके प्रकोप अब पलटकर मनुष्य पर ही पड़ रहे है मनुष्य ने प्रकृति को इतना विकृत कर दिया है कि यह किसी के लिए भी हितकर नहीं रहा है। पर्यावरण एक व्यापक शब्द है, जिसका समान अर्थ है–प्रकृति द्वारा प्रदान किया गया समस्त भौतिक और सामाजिक वातावरण। इसमें जल, वायु, भूमि, पेड़ पौधे, पर्वत तथा प्राकृतिक संपदा और परिस्थितियां आदि का समावेश होता है।

आज पर्यावरण प्रदूषण की वजह से जीवन दुखमय हो गया है। मनुष्य ने खनिजों हेतु खनन व्यापक स्तर पर किया एवं व्यापार के नाम पर बड़े–बड़े जहरीला धुआ उगलने वाले कारखानों का निर्माण किया है। इन्ही कारखानों ने जल में अपना कचरा फैलाया जिससे जल प्रदूषण बढ़ा। जंगलों को तो बचने भी नहीं दिया जिससे प्राणियों के रहने की जगह की समस्या उत्पन्न हो गई। वैज्ञानिक प्रगति की मोह माया में मनुष्य ने अपनी माता तुल्य गंगा मैया तक को नहीं बख्शा है। कृषि में रासायनिक खाद को प्रयोग में लाकर मनुष्य ने अनेक प्रकार के रोगों एवं विषैले प्रभाव को जन्म दिया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक प्रगति पर्यावरण प्रदूषण में सहायक बनी।

प्रदूषण का घातक प्रभाव – आधुनिक युग में संपूर्ण संसार पर्यावरण के प्रदूषण से पीड़ित हैं। हर सांस के साथ इसका जहर शरीर में प्रवेश पाता है और तरह–तरह की विकृतियां पनपती है। इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि प्रदूषण की इस बढ़ती हुई गति से एक दिन पृथ्वी प्राणी तथा वनस्पतियों से विहीन हो सकती है एवं सभ्यता तथा प्रगति एक बीती हुई कहानी बनकर रह जाएगी।

पर्यावरण शुद्धि – दिनोंदिन बढ़ने वाले प्रदूषण की आपदा से बचाव का मार्ग खोजना आज की महती आवश्यकता है। इसके लिए सबको एकजुट होकर इन विनाशकारी ताकतों से दो–दो हाथ करने होंगे। वृक्षों की रक्षा कर इस महान् एवं दुष्ट संकट से मुक्ति पाई जा सकती है। ये हानिकारक गैसों के प्रभाव को नष्ट करके प्राण वायु प्रदान करते है, भूमि के क्षरण को रोकते है एवं पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

उपसंहार – पर्यावरण की सुरक्षा और उचित संतुलन के लिए हमें जागरुक और सचेत होना परम आवश्यक है। वायु, जल ध्वनि, भूमि तथा प्रकृति के प्रत्येक अंश के प्रति हमारी जिम्मेदारी होती है कि हम उसका सदुपयोग करें एवं आने वाली पीढ़ी को एक बेहतर पर्यावरण प्रदान करें। मनुष्य को अपनी अभिलाषाओं एवं प्रकृति की संवेदनाओं के बीच संतुलन बनाना ही होगा अन्यथा विनाश की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

भूमिका 3 अंक मध्य 4 अंक उपसंहार 3 अंक कुल 10 अंक प्राप्त होंगे।

(नोटः– छात्र निबंध लेखन में मौलिकता एवं भाषा का विशेष ध्यान रखें पाठ्येत्तर अध्ययन उत्कृष्ट निबंध लेखन में मार्ग दर्शक होगा)

– – – – – –